संजय की कलम से ..

नारी का पतन और उत्थान

आज के समाज का सबसे बड़ा अभिशाप यही है कि नारी के गर्भ से जन्म लेने वाला नर, माँ को पूज्य समझने वाला नर-समाज, नारी-शरीर को भोग-दृष्टि से देख रहा है। नारी का सबसे बड़ा अपमान यह है कि पुरुष-समाज उसे भोग विलास का साधन समझ उसके साथ मनचाही रीति से अमानुषिक व्यवहार कर रहा है। उस खेल को एक व्यापार समझ, नारी को उस खेल का खिलौना समझ उसका क्रय-विक्रय कर रहा है। नारी का नग्न और अर्धनग्न रूप, नाइट क्लब, कैबरे तथा अनेक ऐसे स्थानों में व्यापारिक रूप से प्रदर्शित किया जा रहा है। पशुओं के माँस के सदृश्य नारी के माँस का खुलेआम क्रय-विक्रय हो रहा है। नारी का शील, भरे बाज़ार में पैसे में बिक रहा है। सिनेमा में नारी के इस विकृत रूप को उभारा जा रहा है। व्यापारिक विज्ञापनों में, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के साइनबोर्डों पर, उपन्यास और पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर नारी को इसी अपमानजनक रूप में बेरोक-टोक प्रस्तुत किया जा रहा है। 'विवाह' को पुरुष-समाज एक ऐसा अधिकार पत्र समझता है जिसमें वह नारी की इच्छा, अनिच्छा, स्वास्थ्य आदि किसी भी प्रतिबन्ध से मुक्त उसके शरीर के साथ मनचाहा खिलवाड़ कर सकता है।

बड़े खेद की बात है कि नारियाँ न केवल इस अपमान का प्रतिरोध ही नहीं करतीं बल्कि वे स्वयं अपने शरीर का प्रदर्शन भी इस रूप में करती हैं कि वे पुरुषों में आकर्षण पैदा कर सकें। आज नारियों के वस्त्र भी इस प्रकार हैं कि उनके शरीर के अधिक से अधिक अंग अथवा शरीर का माँस ग्राहकों की दृष्टि से छूता रहे। ऐसा लगता है जैसे वह स्वयं ही अपने माँस का जाने अथवा अनजाने व्यापार कर रही हो जिसे हम देखने वाले भी नारी का अपमान समझते हैं उसे नारियाँ स्वयं अपना सम्मान मान रही हैं, इस विचारधारा में क्राँतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

नारियों को अपनी शक्ति पहचानना आवश्यक

नारियों को पुरुषों के समान दर्जा तो क्या परन्तु काम-चलाऊ सम्मान तब तक समाज में नहीं मिल सकता जब तक उनमें अपने निज अस्तित्व के विषय में एक नव-चेतना जागृत नहीं हुई है। नारी को यह समझना चाहिये और अपनी समझ के आधार पर पुरुष समाज को समझाना चाहिए कि वह चिकनी खाल-चढ़ा खिलौना नहीं वरन् एक शक्ति है। ऐसा तो भावनात्मक आधार पर ही हो सकता है। बौद्धिक और नैतिक जीवन ही

(शेष...पृष्ठ 25 पर)

अमृत-सूची

- आपदा में आत्म-नियन्त्रण *(सम्पादकीय)* 4
- हम बदलेंगे, जग बदलेगा 5
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- परदादी - देह में रहते विदेही...8
- ज्ञान-योग से जाग जाती है 9
- 'पत्र' संपादक के नाम 10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- मोह का महल ढहेगा ही 14
- होली का आध्यात्मिक रहस्य .15
- परमात्म अवार्ड.....17
- जाको राखे शिव भगवान 18
- सहना अर्थात् पूज्य बनना 19
- महिला सशक्तिकरण 20
- गरीबी से छुटकारा.....22
- न भूलें करावनहार की 23
- मैं और मेरापन.....24
- मन को दबाओ नहीं.....26
- काश! बाबा पहले मिला.....27
- तोल-तोलकर बोल 28
- रूहानी ज्ञान का जादू 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- लगा दिए उमंग-उत्साह.....32
- उबर चुकी हूँ दुखों से 33
- समय का महत्व.....34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510

2. प्रकाशनावधि : मासिक

3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त

4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त

5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

स्वमानों की लिस्ट निकालें और याद करें कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ... मैं वो श्रेष्ठ आत्मा हूँ जिसे देखने के लिए भक्त तरसते हैं। मैं महान आत्मा सो देवात्मा हूँ, मेरा भाग्यविधाता स्वयं भगवान है और मेरा भाग्य सर्वश्रेष्ठ है, मैं बाबा का भाग्यशाली सितारा हूँ। यदि कोई कहे, आप समझदार हैं और आपका सिखाने का तरीका अच्छा है, आप सुंदर हैं तो ज़रा सोचिए, सामने वाला इस शरीर की प्रशंसा कर रहा है। यदि स्वयं के प्रति सूक्ष्म अभिमान आने की सम्भावना है तो उसी समय उस प्रशंसा को प्रभु समर्पित कर दें। इससे वो कई गुना होकर हमें भविष्य में प्राप्त होगी तथा याद रखें कि जो भी गुण हममें है वह प्रभु का ही दिया हुआ है।

मनोदशा स्थिर रखें

मैं और मेरेपन से अभिमान और अपमान आता है, ऐसे गलत दृष्टिकोण के कारण मनचाहे परिणाम नहीं मिलते अत: परिस्थिति भले ही कैसी भी क्यों न हो, अपनी मनोदशा को सदा स्थिर रखें। हमेशा याद रखें कि मैं आत्मा इस परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर सकती हूँ क्योंकि कल्प पहले की तरह विजय के पार्ट को मुझे ही दोहराना है। अमृतवेले उठते वा रात्रि को सोते सच्चे मन से बाबा को मैं और मेरापन अर्पित करें तथा लिखें कि किन परिस्थितियों में ये विकार आते हैं और इन पर विजय कैसे प्राप्त की जाये। कई बार सेवा में भी मैं और मेरापन आ जाता है। मैं यह सेवा नहीं करूँगी या मुझे तो यही सेवा अच्छी लगती है। याद रखें, हमें तो सोलह कला सम्पूर्ण बनना है। अगर एक सेवा होती है और दूसरी नहीं तो ज़रूर कुछ कमी है, उसे ज्ञानबल और योगबल से दूर करें। यदि हर तरह से हम सेवा नहीं कर पाए तो कौन मानेगा कि हम सर्व गुण सम्पन्न हैं अर्थात् जो बाबा से 'हाँ जी' का पाठ सीखा है उसे कैसे पूरा कर पायेंगे।

तुलना करें केवल बाबा के साथ

यदि मुझमें तुलना करने का संस्कार है जैसे कि मैं तो बहुत बुद्धिमान हूँ, सामने वाला मूर्ख है, यह मेरी प्रिय किताब है, इसे मैं नहीं दूंगा, सामने वाले में भाषण करने की अच्छी कला है, मेरे शरीर का रंग काला है और मेरा मित्र गोरा है, तो इसका मतलब है कि हमारे अंदर हीन भावना या अहम् भावना ने जन्म ले लिया है। अगर हम समय रहते सचेत न हुए तो इस तुलना में संगमयुग का समय हाथ से निकल जाएगा अत: तुलना ना ही करें तो बेहतर है। यदि तुलना करने का संस्कार पक्का हो तो अपनी तुलना सिर्फ और सिर्फ ब्रह्मा बाबा से ही करें कि बाबा तो निष्काम सेवाधारी हैं और उन्होंने हड्डी-हड्डी शिव बाबा व माताओं की सेवा में समर्पित कर दी, तो मैंने कितनी सेवाएं कीं? क्या मेरे संस्कार बापसमान बने हैं? क्या सामने वाले को जो भाषण आता है वो स्वयं उसकी देन है या प्रभु की देन है? हम अपने आप से इस तरह प्रश्न पूछें और जो भी कमियाँ स्वयं में समझते हैं, चार्ट द्वारा अपना पोतामेल बाबा को देकर चेक करते रहें और स्वयं को बापसमान चेंज करते रहें। याद रखें, कल हमारा नहीं है बल्कि आज हमारा है और अभी नहीं तो कभी नहीं।

❖

नारी का पतन...पृष्ठ 3 का शेष...

नारी का जीवन है। अपने को शरीर समझने से ही नारी अबला बनी है। यदि वह अपने को मन, बुद्धि व संस्कारों से युक्त शुद्ध आत्मा समझे और आत्मस्मृति में स्थित हो जीवनपथ पर चले तो उसे अपने सच्चे शक्ति-स्वरूप का अनुभव होगा। वह अबला न रह कर पुरुषों को भी बल प्रदान करने वाली होगी। उसे और समाज को यह पता चलेगा कि नारी 'भोग्या' नहीं बल्कि 'पूज्या' है जिसकी पूजा आज भी भारतवर्ष में दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी रूप से हो रही है। प्रत्येक नारी को यह रूप धारण करना है और वह कर सकती है क्योंकि वह उसी का रूप है। ❖